फणीश्वरनाथ रेणु

सृजन एवं सरोकार

संपादक

आनन्द बिहारी

Periyar Prakashan

DELHI ● PATNA

Mo.: +91-9263544674, 8285348797

Publisher & Distributor :
Periyar Prakashan

A/44, Ashokpuri Colonyy
Khajpura, Patna-800014
e-mail id : periyarprakashan@gmail.com
Mob. : +91-9263544674
+91-8285348797

First Edition : October, 2021

© **Author**

Price : ₹ 250

Printer:
Alka Press
Patna-6

Criticism
FANISHWARNATH RENU : SRIJAN EVAM SAROKAR
Edited by Anand Bihari
ISBN : 978-93-85675-15-7

'तीसरी कसम' : मानवीय संवेदना की गझिन बुनावट

डॉ. निरंजन कुमार यादव

हिंदी कथा साहित्य में जिस प्रकार आजादी के पूर्व प्रेमचंद का महत्व है, ठीक उसी प्रकार आजादी के बाद फणीश्वर नाथ रेणु का है। हिंदी साहित्य में रेणु के कहानीकार रूप की चर्चा उनके उपन्यासकार की तुलना में कुछ कम हुई है, इसका एक महत्वपूर्ण कारण उनका बहुचर्चित एवं बहुपठित उपन्यास 'मैला आँचल' रहा है। जिसकी लोकप्रियता सर्वविदित है। आज यदि हम हिंदी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों की सूची बनाएं तो निर्विवाद रूप से 'गोदान' के बाद दूसरा नाम 'मैला आँचल' का ही होगा। जितनी चर्चा-परिचर्चा 'मैला आँचल' की होती है अथवा हुई है उसकी तुलना में रेणु के अन्य लेखन पर बहुत कम बातचीत हुई है, लेकिन 'मैला आँचल' के बरक्स अन्य उपन्यासों की तुलना में रेणु का कहानीकार रूप अधिक महत्व का है। इस रूप में वह एक अनूठे-अप्रतिम लेखक हैं। रेणु ने हिंदी साहित्य को 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम', 'रसप्रिया', 'ठेस', 'पंचलाइट', 'लाल पान की बेगम', 'संवदिया' एवं 'आदिम रात्रि की महक' जैसी अनूठी, अविस्मरणीय एवं कालजयी कहानियाँ दी हैं। रेणु की अब तक कुल 63 कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। अभी उनके लेखन पर 'भरत यायावर' एवं 'अनंत' जैसे लोग लगातार काम कर रहे हैं। उनकी पाण्डुलिपियों का अनुसंधान कर रहे हैं। अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाश में ला रहे हैं। बहरहाल संख्या के हिसाब से रेणु की कहानियाँ भले ही कम हैं, लेकिन महत्व की दृष्टि से बहुत अधिक समृद्ध हैं। इस संदर्भ में प्रेम कुमार मणि लिखते हैं कि - "*यदि उन्होंने (रेणु ने) और कुछ न लिख कर केवल 'तीसरी कसम' भी लिखा होता तब भी गुलेरी जी की तरह वह हिंदी कथा जगत में अमर होते।*"[1]

'तीसरी कसम' सर्वप्रथम सन 1957-58 ई. में पटना से नर्वदेश्वर प्रसाद के संपादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अपरंपरा' में प्रकाशित हुई। फिर सन्

हुकूमत) ने लोक ज्ञान को खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। किसानों का जमकर शोषण किया, कारीगरों के उद्योग को तबाह किया, लोक कलाकारों को असभ्य बताया, फिर भी इन विपरीत परिस्थितियों में भी उन्हें सहारा लोक ज्ञान का ही रहा। लोकज्ञान के बल पर ना केवल वे जिंदा रहे बल्कि अपने समाज के लिए भी भोजन कपड़ा आदि का इंतजाम करते रहे। आजादी के बाद भी उनकी भूमिका को कोई सम्मान नहीं मिला। स्वदेशी शासन व्यवस्था में भी वह उपेक्षित ही रहे। विश्वविद्यालय में पढ़े-लिखे लोगों ने उनके ज्ञान और कौशल का तिरस्कार ही किया, लेकिन रेणु ने उसे सम्मान दिया है। इस नजरिए से भी इस कहानी को पढ़ा जाना चाहिए। 'तीसरी कसम' एक प्रेम कथा तो है ही इसके साथ- ही-साथ इसमें मानवीय संवेदनाओं की गझिन बुनावट भी है। इस कहानी के माध्यम से जिस निश्छल नायक का चरित्र रेणु गढ़ते हैं वह आज की दुनिया में दुर्लभ है, लेकिन ऐसा नहीं है कि ऐसे लोग हमारे समाज में नहीं होते थे। वह थे, खूब थे, लेकिन हम सभ्य होते-होते इतने कृत्रिम हो गए कि हमारी सहजता खो गई है। 'तीसरी कसम' उसी सहजता को स्थापित करने वाली कहानी है।

सन्दर्भ :

1. Samalochan.com2020/05
2. रेणु, फणीश्वर नाथ, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल एंड संस प्रकाशन नई दिल्ली : 26
3. वही : 38
4. शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली, खण्ड 6, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली : 281
5. रेणु, फणीश्वर नाथ, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल एंड संस प्रकाशन नई दिल्ली : 46-47
6. youtube.com
7. रेणु, फणीश्वरनाथ, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल एंड संस प्रकाशन नई दिल्ली : 45
8. वही : 41

❑❑❑

◆ लेखक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर में हिंदी के सहायक प्राध्यापक हैं। मो. 8726374017